आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 10/12/2022; Accepted: 13/12/2022; Reviewed: 18/12/2022; Published: 24/12/2022

कामायनी – चेतोविकास का दर्पण

- प्रसाद एम
शोधार्थी
कुसाट हिंदी विभाग,
कोच्चि , केरला
मोबाइल – 9072577687
ई मेल – prasad.87m@gmail.com

प्रसाद एम, **कामायनी – चेतोविकास का दर्पण**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 4/दिसंबर 2022,(333-337)

समय की गति के साथ विस्मृति में न जानेवाली कुछ कृतियां काव्य जगत में उद्भूत होती है। ये समय के साथ बढ़ती है , समय के साथ सरोकार करती है और तत्कालीन समाज से संवाद करती हुई नए अर्थ एवं नए मान देती है। साहित्य , सत्य का ही पर्याय होने से सत्य की प्रत्यक्षता एवं परोक्षता दोनों की ओर इनकी जड़ें जाती हैं। मननशील पाठक को इनका पद-पत्र नव्य संकेत बना देते हैं। इस कोटि में आती है – कामायनी। अमर रचनाकार जयशंकर प्रसाद की अमर कृति कामायनी के पात्रों के माध्यम से कुछ बताना इस लेख का उद्देश्य है।

कामायनी की भूमिका में स्वयं प्रसाद जी ने कहा था " आर्य साहित्य में मानवों के आदिपुरुष मनु का इतिहास वेदों से लेकर पुराण और इतिहासों में बिखरा हुआ मिलता है। श्रद्धा और मनु के सहयोग से मानवता के विकास की कथा को रूपक के आवरण में , चाहे पिछले काल में मान लेने का वैसा ही प्रयत्न हुआ हो जैसा कि सभी वैदिक इतिहासों के साथ निरुक्त के द्वारा किया गया , किन्तु मन्वन्तर के अर्थात् मानवता के नवयुग के प्रवर्तक के रूप में मनु की कथा आर्यों की अनुश्रुति में दृढ़ता से मानी गयी है। इसलिए, वैवस्वत मनु को ऐतिहासिक पुरुष ही मानना उचित है।"

"यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है, तो भी बड़ा ही भावमय श्लाघ्य है! यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है। आज हम सत्य का अर्थ – घटना कर

लेते हैं। तब भी , उसके तिथि क्रम मात्र से सन्तुष्ट न होकर , मनोवैज्ञानिक अन्वेषण के द्वारा इतिहास की घटना के भीतर कुछ देखना चाहते हैं ।"

कामायनी की मूल कथा हम सब जानते है जैसे की जल – प्लावन , देवों से विलक्षण होना , मनु द्वारा नव्य एवं भिन्न संस्कृति का निर्माण करना – वह इतिहास ही है । शतपथ ब्राह्मण आठवें अध्याय और श्रीमद् भागवत जैसे ग्रन्थों में विस्तृत रूप से इनका उल्लेखन है ।

देवगण के उच्छृंखल स्वभाव , निर्बाध आत्मतुष्टि में अन्तिम अध्याय लगा और मानवीय भाव अर्थात् श्रद्धा और मनन का समन्वय होकर प्राणी को एक नए युग की सूचना मिली । कामायनीकार की वैचारिक दृष्टि मनु , श्रद्धा , इड़ा , मानव , किलात और आकुली इन पौराणिक या ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से उतना ही नूतन , सनातन एवं सार्वलौकिक बन जाती है ।

मानव चैतन्य को देश तथा काल की कोई सीमा नहीं , इसलिए वर्तमान चिंतन में कबीर से लेकर कामायानी तक की सृजनात्मकता भी वर्तमान है , चिरनूतन है ।

कामायनीकार का मनु भागवत प्रसिद्ध वैवस्वत मनु है । मनु की कथा को व्यक्ति के स्तर पर या वर्ग के स्तर पर भी ईक्षण करना आवश्यक है । मनु एक व्यक्ति है । साथ ही साथ मानव जाति का प्रतीक भी है ।

व्यक्तिस्वत्व और वर्गस्वत्व अर्थात् ontogenetic and phylogenetic दोनों के परिणाम या evolution को युग्म रूप से प्रकाशित करनेवाली कृति है कामायनी । इस परिणाम – कथा का प्रारम्भ उस अन्तर्मन के उदय से होता है जो संतत स्वयं परिष्कार वैभव से युक्त हो । अच्छा ! हम लोग मानव हैं । जी रहा था । अब भी जीते हैं । उस ज़माने में अर्थात् आदिम दौर में अन्य प्राणियों की तरह हम भी व्यापार चतुष्टय में मग्न होकर , जीकर – मारकर – खाकर – सोकर और प्रजनन करके जी रहे थे । इस प्रकार की जीवन यात्रा का सुव्यक्त बोध नहीं लेकिन धुंधली स्मृति है ।

'वर्ग स्वत्व परिणाम ' नाटक के सुदीर्घ पहला अंक के नट के रूप में Homo sapiens आते हैं । आदिम सहज वासनाएं इनकी इच्छा और क्रिया को संभाला और शासन किया । बाद में अहंबोध का उदय हुआ । अंतरंग का विकास हुआ । इच्छा शक्ति और क्रिया शक्ति इन दोनों को राज करने के लिए ज्ञान शक्ति का आविर्भाव हुआ। सत्य, सौंदर्य और शिव जैसे संकल्प खुले । प्रेम का मतलब केवल प्रजनन हेतु मौलिक रति न होकर उदात्त एवं अर्थवान हो गया । मानवेतर प्राणी में रति का मूल लक्ष्य वर्ग वृद्धि ही है । भोगवासना के साथ त्यागवासना होने का भी बोध हुआ और उसे बड़ाने की श्रद्धा भी उदित हुई । प्रारंभिक दौर में मर्द एवम् औरत दोनों की मौलिक वासनाएं जैसे कि मनोविकार के स्तर तथा बौद्धिक शक्ति के स्तर दोनों एक समान ही थीं ।

परिणाम के प्रथम पड़ाव में जब मस्तिष्क का विकास हुआ तब मनुष्य का सुदीर्घ शैशव की शुरुआत हुई। संरक्षण की भी आवश्यकता हुई । इस अवस्था विशेष के फलस्वरूप संरक्षण हेतु औरत का वैकारिक तल विकसित हुई । मर्द – शिशु के मस्तिष्क में वैचारिक तल ज्यादा प्रवृद्ध हुआ ।

फलस्वरूप समाज में ऐसी बिम्बात्मकता आई कि स्त्री का स्वत्व प्रेम जैसी आर्द्रताओं का और पुरुष का स्वत्व बल धीरताओं का अधिष्ठान बन गए। इसका मतलब यह नहीं है कि अन्य स्तर रिक्त या ऊषर है। स्त्री के अंदर एक पुरुष सत्ता (मनोविज्ञान में जिसे animas कहते है) और पुरुष के भीतर एक स्त्री सत्ता (जिसे anima कहते है) विद्यमान है।यथासमय वह जागती है और काम करती है।

वस्तुतः कामायनी के चरित्रों का प्रवर्तन त्रिगुण युक्त त्रिशक्ति संपन्न जगजीवन की ओर संकेत करता है। विकार और विचार दोनों का सुघटित संयोग ही बुद्धि शक्ति और संतुलित चेतना का नियामक है। चेतोविकास से संबंधित इस वैज्ञानिक तथ्यों के विचार विमर्श के बिना कामायनी जैसी गूढ कृति का सार्थक अध्ययन संभव नहीं।

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष भींगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।" (१)

यह व्यक्ति एक पुरुष है (जिसे हम मनु कहते है) वह विकारी है। भावुक है। इसलिए वह रोते है।
मनु मननशील है। मनीषी भी। बोध चेतस शक्ति के पुरुष आकार। पुरुषोचित संज्ञा से सूचित करनेवाली संपूर्ण बौद्धिक शक्ति व्यापार और वैकारिक ऊर्ज्जा आदि सबका प्रतिनिधि है मनु। पुरुषोचित इच्छा – ज्ञान – क्रियाओं की मूर्ति है।

श्रद्धा नाम से प्रख्यात आगंतुक व्यक्ति जो है व्यष्टि एवं समष्टि दोनों स्तर पर बोध चेतस से ज्यादा गहरे तल में प्रवर्तित अंतरात्मा है। दोनों ही स्तर में सहज अवबोध और नव सर्जना की शक्ति श्रद्धा की विशेषता है। सामूहिक अबोध स्तर का एक अंश है व्यक्ति का अबोध स्तर।

व्यक्ति और समाज के मनःसाक्षी के रूप में अंतिम समय पर आनेवाली रक्षक सत्ता का स्त्रीरूप है – श्रद्धा।

इड़ा कौन है ? इड़ा मनु की पुत्री है। बाद में इड़ा के प्रति भी मनु का आकर्षण होता है तब इड़ा जो कहती है वह ध्यान देने योग्य है –

"अरे आत्मजा प्रजा पाप की परिभाषा बन शाप उठी"। (२)

अर्थात् प्रजा जो है आत्मजा है। संतान है। इड़ा पहले पहल मननशील मनुष्य के लिए मात्र उद्भूत सारस्वत शक्ति है। साथ ही साथ इड़ा जो है व्यक्ति और नर जाति की भौमिकता यानी की ऐन्द्रिय जीवन स्तर का और स्वयं भूमिका भी स्त्रैण आकार है। बोध चेतस की साक्षात् शक्तियों का स्त्रैण रूप। स्त्री सहजता से उत्पन्न वैकारिक ऊर्ज्जा और बुद्धिशक्ति का और उसके अनुरूप जो इच्छा ज्ञान क्रिया शक्ति मौजूद है उनका भी प्रतीक है।

श्रद्धा और मनु का पुत्र पूर्णता और आनंद का आकलन रूपी दिव्य शिशु है, आदिम प्रतीक है। अंतरात्मा और बोध चेतस दोनों के मेल से संतुलन एवं सल्लय की संतान उत्पन्न होती है।

इन चार चरित्रों के माध्यम से व्यक्ति और नरजाति दोनों की पूर्णता की कथा एक साथ कहती है कामायनी । चिंता सर्ग में महासत्य का एक चपेटे के बारे में कहा गया । प्रस्तुत चपेट अथवा आघात एक विस्फोट है जिसके कारण ' प्रबोधन ' की स्थिति एक प्रकार सी enlightenment की स्थिति होती है । मनु के यहां प्रस्तुत बोध जो है – अहं का बोध है । एक प्रकार की स्मृति प्रज्ञा के कारण मनु के मनु में बीती हुई बातों पर दुःख जन्म लेते है और वे द्वंद्व महसूस करते है । यह ज्ञान जो है स्वर्ग खोने का ज्ञान है – अज्ञान के स्वर्ग खोने का। चिंता रूपी प्रबोधन के बाद उस विराट प्रकृति को ही मनु पूजन करते है । प्रकृति रक्षक है भक्षक भी है । यज्ञादि संकल्पों के बाद अपर व्यक्ति का भी बोध उनके मन में आशा की किरणों जैसे आता है ।

उपनिषद्वचन देखिए –

"ईशावास्यमिदं सर्वम्
यत्किंचजगत्यां जगत
तेन त्यक्तेन भुंजीथा:
मा गृध: कस्यस्विद्धनम्" (३)

जगत में जो कुछ स्थावर जंगम संसार है वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादनीय है अर्थात् उसे भगवत्स्वरूप अनुभव करना चाहिए । उसके त्याग भाव से तू अपना पालन कर ; किसी के धन की इच्छा न कर। भोग की वासना जो है मानव सहज है । त्याग की भी । दोनों का संतुलन ही हमें आगे चलने के लिए सक्षम बनाते है । बाकि सब चिंता जो है स्वार्थ वश है ।

'शक्तिशाली हो, विजयी बनो' श्रद्धा का यह motivation मंत्र जो है, 'समस्त विजयिनी मानवता हो जाय' की समन्वय भावना का मूल ही है ।

त्याग एवं भोग दोनों की संतुलन अवस्था मनुष्य को पूर्णता की ओर लेती है यही जीवन तत्व कामायनी काव्य की ध्वनि है ।

संक्षेप में हम कह सकते है की कामायनी महाकाव्य द्वारा वर्तमान समय और समाज का महत्वपूर्ण लेनदेन है। सभ्यता की उच्छृंखलता के कारण हुए नाश , मनु की depression की अवस्था, श्रद्धा द्वारा नवजागरण, मनु की अतृप्त भोग वासनाएं , ईर्ष्या तथा रूठकर जाना , ये सब आधुनिक मानव से दूर रहनेवाली बात नहीं है । सारस्वत प्रदेश को फलवत् बनाना , नगर की अद्भुत निर्मिति , भोग विलास की पुनरुक्ति , विरक्ति , आध्यात्मिकता और सामरस्य आदि भौतिक दैविक और आत्मिक संबंधों की पवित्रता को सामने लाता है ।

भूतकाल की और जाना' इस प्रकार एक महान नारा बन जाता है फिर भी काल की कल्पना ही गंवाके हृदय के कमल पर कामायनी जैसी वीणापाणिनी बैठती है – श्रद्धावान लभते ज्ञान का मंत्र जपते हुए ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

(1) (2) Prasad Jayshankar. (1988), Kamayani, Delhi Hindi pocket books private limited.

(1) (२) प्रसाद जयशंकर , (१९८८) , कामायनी , दिल्ली हिन्दी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड।

(2) Eeshavasya Upanishad (२) ईशावस्य उपनिषद

****